I.C.S.E

कक्षा : 10

हिन्दी – 2016

समयः 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

Answers to this Paper must be written on the paper provided separately.

You will not be allowed to write during the first 15 minutes.

This time is to be spent in reading the question paper.

The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers

*This Paper comprises of two sections ; **Section A** and **Section B.***

*Attempt **All** the questions from **Section A.***

*Attempt any **four** questions from **Section B**, answering at least **one** question each from the **two** books you have studied and any **two** other questions.*

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION – A (40 Marks)

Attempt all questions

Q.1 Write a short composition in **Hindi** of approximately **250** words on any **one** of the following topics : [15]

निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर **हिन्दी** में लगभग **250** शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए :

(i) पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से फैशन एवं प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याओं का जन्म हो रहा है तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

(ii) "सादगी भी लोगों के दिलों में अमिट छाप छोड़ सकती है" कथन को ध्यान में रखते हुए अपने देश के किसी ऐसे व्यक्तित्व के विषय में लिखिए जिन्होंने 'सादा जीवन उच्च विचार' को आधार मानकर अपना

जीवन बिताया,आपके ऊपर उस व्यक्तित्व का प्रभाव किस प्रकार का रहा यह भी स्पष्ट कीजिए।

(iii) योग के माध्यम से हम शरीर तथा मन दोनों को स्वस्थ कर सकते हैं, जीवन में योग की अनिवार्यता तथा उससे मिलने वाले लाभों का वर्णन करते हुए अपने विचार लिखिए।

(iv) एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो :

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

(v) नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कहानी अथवा लेख लिखिए, जिसका सीधा संबंध चित्र से होना चाहिए।

Q.2 Write a letter in **Hindi** in approximately **120** Words on any **one** of the topics given below : [7]

निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर **हिन्दी** में लगभग **120** शब्दों में पत्र लिखिए :

(i) आज टेलीविजन द्वारा विभिन्न चैनलों पर अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र से संबंधित कार्यक्रम दिखाकर जनता को भ्रमित किया जा रहा है। भारत सरकार के सूचना एवम् प्रसारण मंत्री को इसकी जानकारी देते हुए ऐसे कार्यक्रमों पर रोक लगाने का अनुरोध कीजिए।

(ii) आपकी चचेरी बहन जो गाँव ने रहती है, उसकी दसवीं के बाद शिक्षा रोक दी गई है अत: उसकी आगे की पढ़ाई जारी रखने का निवेदन करते हुए

अपने चाचाजी को पत्र लिखिए जिसमें नारी शिक्षा की आवश्यकता और लाभों की भी चर्चा कीजिए।

Q.3 Read the passage given below and answer in **Hindi** the questions that follow, using your own words as far as possible :- [10]

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर **हिन्दी** में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :

बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन खेत में जी तोड़-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी मात्र एक इच्छा थी। वह उडुपि के मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि दक्षिण कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है। वह अपनी गरीबी के कारण तीर्थयात्रा की इच्छा पूरी नहीं कर पाता था। इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। समय के साथ-साथ हरिहर की आर्थिक स्थिति भी सुधरती गई। अब उसने तीर्थयात्रा की योजना बनाई। उसकी पत्नी ने उसके लिए पर्याप्त भोजन बाँध दिया।

हरिहर तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ उडुपि की ओर चल दिया। मार्ग में उसे एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा से कराह रहा था। जैसे ही हरिहर की नजर उस पर पड़ी, उसका हृदय करुणा से भर गया। उसने बूढ़े के पास जाकर पूछा, “बाबा, क्या तुम भी तीर्थयात्रा करने उडुपि जा रहे हो?” बूढ़े ने उत्तर दिया, “मेरा एक बेटा बीमार है और दूसरे बेटे ने भी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया। फिर मैं तीर्थयात्रा कैसे करूँ।”

हरिहर समझता था कि दिन-दुखियों की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है इसलिए उसने उडुपि जाने से पहले बूढ़े के घर जाने का निश्चय किया। उसके साथियों ने उसे बहुत समझाया “बहुत मुश्किल से तुमने धन एकत्र किया है, अगर यह नष्ट हो गया तो फिर तुम कभी तीर्थयात्रा नहीं कर पाओगे।” हरिहर पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे

के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया। लेकिन इन सारे कार्यों में उसके सारे पैसे खर्च हो गए।

अब उसने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया। उसे उडुपि न जा पाने का बिल्कुल भी दुःख न था क्योंकि वह जानता था कि उसने अपना सारा धन दिन-दुखियों की सेवा में खर्च किया था। घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बता दीं। पत्नी भी इस पर प्रसन्न हुई क्योंकि वह भी एक धार्मिक स्वभाव की महिला थी। उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जी उससे कह रहे थे, “हरिहर तुम मेरे सच्चे भक्त हो। तुमने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं मैं ही था। तुम्हारी परीक्षा के लिए ही मैं उस बूढ़े आदमी का वेश धारण कर आया था। तुम मेरे सच्चे सेवक हो।” इस तरह हरिहर बगैर तीर्थयात्रा पर गए पुण्य का भागीदार बना।

1. हरिहर क्या काम करता था? उसकी एक मात्र इच्छा क्या थी? [2]
2. हरिहर को तीर्थयात्रा के मार्ग में कौन मिला? उसकी क्या स्थिति थी? [2]
3. हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की सहायता कैसे की? [2]
4. हरिहर ने घर लौटने का निश्चय क्यों किया? वहाँ लौटने पर हरिहर ने क्या स्वप्न देखा? [2]
5. इस गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है? [2]

Q.4 Answer the following according to the instructions given:
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए : [1]
   - लोभ
   - इतिहास

2. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : [1]

- बादल
- स्वतंत्र

3. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए : [1]
- उपकार
- कोमल
- नूतन
- स्वामी

4. भाववाचक संज्ञा बनाइए : [1]
- अधिक
- भक्त

5. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए : [1]
- अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना
- बाल-बाल बचना

6. कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए :

(a) महाराणा प्रताप के साहस की तुलना नहीं की जा सकती है। [1]
(रेखांकित शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिए)

(b) मेरे घर में जो नौकर काम करता है वह भाग गया। [1]
(सरल वाक्य बनाइए)

(c) राजा का सेवक बहुत बुद्धिमान था। [1]
(लिंग बदलकर वाक्य दोबारा बनाइये)

SECTION - B (40 Marks)

Attempt four questions from this section.

You must answer at least **one** question from each of **two** books you have studied and any **two** other questions.

(**गद्य संकलन**)

Q.5 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"ऐसा मत कहो, महाराज। उम्र तो बहुत थी। पचास साठ रूपया महीना पेंशन मिलती तो कुछ और काम कहीं करके गुज़ारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गए और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।"

भोलाराम

लेखक - हरिशंकर परसाई

1. उपर्युक्त कथन किसने, किससे और कब कहा? [2]
2. श्रोता का संक्षिप्त परिचय दीजिये। [2]
3. श्रोता को भोलाराम के विषय में वक्ता से क्या पता चलता है? समझाकर लिखिए। [3]
4. वक्ता श्रोता को कौनसा कार्य सिद्ध करने के लिए कहाँ भेजता है और उसका क्या परिणाम निकलता है? [3]

Q.6 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

मैं खिड़की के पास जा खड़ा हो गया। बाहर लू चल रही थी। नीचे धरातल पर कुछ लोग आ जा रहे थे .... वे ऊपर से बहुत लाचार और बेचारे लग रहे थे और मेरे मन से सबके लिए सद्भावना की नदियाँ फूट रही थीं ...

चप्पल

लेखक - कमलेश्वर

1. कथन का वक्ता कौन है? वह अस्पताल क्यों गया था? [2]

2. वक्ता अस्पताल में जाते समय क्या सोचता है? [2]

3. वक्ता को अस्पताल की किस मंजिल पर जाना था? लिफ्ट में जाते समय उसने किसे और किस दशा में देखा बताइए कि उसके साथ क्या घटना घटी थी? [3]

4. प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य लिखिए। [3]

Q 7 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''जब कभी हम वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अंदर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है। परन्तु वह चिर-स्थायी नहीं होता, इसका कारण सिर्फ यही है कि हममें भीतर दृढ़ता का मलबा तो होता नहीं। सिर्फ ख्याली महल उसके दिखलाने के लिए बनाना चाहते हैं।"

सच्ची वीरता

लेखक - सरदार पूर्णसिंह

1. सच्ची वीरता के संबंध में लेखक ने क्या बताया है? [2]

2. वीरता का विकास किस प्रकार किया जा सकता है? तथा बताइए कि वीरता निराली और नई कैसे होती है? [2]

3. वीर पुरूषों की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं? समझाकर लिखिये। [3]

4. मीराबाई तथा महाराज रणजीत सिंह के उदाहरणों द्वारा लेखक ने क्या समझाया है? स्पष्ट कीजिये। [3]

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

लेखक - प्रकाश नगायच

Q.8 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“हमें युवराज न कहिए, गुरुदेव! आज चन्द्रगुप्त की स्थिति वही है जो मगध के एक साधारण नागरिक की है।” चन्द्रगुप्त ने दुःखी स्वर में कहा-” फिर भी आप विश्वास रखिए, मगध चन्द्रगुप्त का है और रहेगा। और केवल मगध हो क्यों, सारा भारतवर्ष उसका है। वह सारे भारत का है। जब तक शरीर में प्राण हैं, वह विदेशियों को भारत की पवित्र भूमि पर पाँव न रखने देगा।”

1. गुरु कौन हैं? उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
2. मगध की दशा में क्या परिवर्तन हुआ था तथा क्यों? [2]
3. चन्द्रगुप्त सामर्थ्यवान होते हुए भी मगध की दशा सुधारने के लिए विद्रोह क्यों नहीं करना चाहता था? समझाकर लिखिये। [3]
4. गृह युद्ध से आप क्या समझते हैं? गृह युद्ध से देश पर क्या प्रभाव पड़ता है? उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिये। [3]

Q.9 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

“और फिर महादेवी को इसकी चिंता क्यों? आप मगध के विशाल साम्राज्य की महादेवी हैं। आपके एक संकेत पर मगध की सेना ही नहीं, प्रजा भी हँसते-हँसते प्राण निछावर कर सकती है।”

1. महादेवी किसे कहा गया है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिये। [2]
2. उक्त कथन की वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]
3. महादेवी चिंतित क्यों है? देवसेना उसे क्या समझाती है? स्पष्ट कीजिए। [3]
4. नारी के जीवन के बारे में महादेवी के क्या विचार हैं? समझाकर लिखिये। [3]

Q.10 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"उसके लिए चंद्रगुप्त को बुलाने का अर्थ था चंद्रगुप्त से सहायता की भीख माँगना अर्थात चंद्रगुप्त के आगे झुकना और वह उसे अपना अपमान समझता था। साथ ही उसे सबसे अधिक भय और चिंता ध्रुवस्वामिनी की ओर से रही।"

1. चंद्रगुप्त को बुलाना क्यों आवश्यक हो गया था? उसे कौन बुलाना नहीं चाहता था? [2]
2. मंत्रियों तथा सेनाध्यक्षों ने क्या प्रस्ताव रखा और क्यों? [2]
3. चंद्रगुप्त से सहायता माँगना अपमान क्यों समझा जा रहा था? समझाकर लिखिये । [3]
4. रामगुप्त के मन में ध्रुवस्वामिनी की ओर से भय के क्या कारण थे? समझाकर लिखिये। [3]

एकांकी सुमन

Q.11 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

तुम तो बिना बात ही बिगड़ उठते हो! देखो बिरादरी का मामला है। आज तुम न जाओगे उसके यहाँ, तो कल वे भी तुम्हारे यहाँ नहीं आएँगे। आखिर तुम्हें भी तो बेटे-बेटियों की शादी करनी है।

मेल-मिलाप

लेखक - देवराज 'दिनेश'

1. वक्ता कौन है और उसने यह किस संदर्भ में कहा है? [2]
2. वक्ता को बिरादरी की चिंता क्यों है? वह अपने पति को क्या समझाना चाहती है। [2]

3. श्रोता को वक्ता की बातें अच्छी क्यों नहीं लगती? वह बिरादरी के विषय में क्या कहता है? [3]

4. पास-पड़ोस में रहने के लिए मनुष्य का व्यवहार कैसा होना चाहिए? तथा इस एकांकी से क्या शिक्षा मिलती है? [3]

Q.12 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''रोने से उन्हें दुःख होगा। उन्होंने प्राण दे दिए, पर शासन और जनता का संतुलन ठीक कर दिया। वे शहीद हो गये, पर दूसरों को बचा गए। नगर में अब बिलकुल शांति है। सब मौन सगर्व इन बलिदानों की चर्चा कर रहे हैं। सब शोक संतप्त हैं।''

सीमा-रेखा

लेखक - विष्णु प्रभाकर

1. वक्ता कौन है? उसके अनुसार कौन शहीद हो गया? [2]
2. बलिदान किसने दिया? बताइये उनके बलिदान पर गर्व का अनुभव क्यों किया जा रहा था? [2]
3. शासन और जनता के बीच का संतुलन कब बिगड़ता है और उसे कैसे ठीक किया जा सकता है? अपने विचार व्यक्त कीजिये। [3]
4. किसी भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था में हड़ताल या प्रदर्शन आदि करना कहाँ तक न्यायसंगत है? समझाकर लिखिये। [3]

Q.13 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :
निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"एक पखवारे से बराबर लड़ाई हो रही है - अतरौलिया, आजमगढ़, मगहर - हर जगह कुंवरसिंह, हर जगह तूफ़ान, मगर गंगा मैया ने कैसी शक्ति उस बूढ़े कुंवरसिंह के बदन में फूँक दी है। बिजली की जोत है कि पल में चकाचौंध चमक कर दे। सावन की झड़ी है कि जो थमने का नाम ही न ले।"

विजय की वेला

लेखक - जगदीशचन्द्र माथुर

1. एक पखवारे का क्या तात्पर्य है? लड़ाई किससे और क्यों हो रही थी? [2]
2. सावन की झड़ी है कि जो थमने का नाम ही न ले - पंक्ति से एकांकीकार का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिये। [2]
3. यहाँ किसकी और किस प्रकार प्रशंसा की जा रही है? समझाकर लिखिये।[3]
4. प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिये। [3]

काव्य-चन्द्रिका

Q.14 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"हर परिवर्तन से प्राण-शक्ति ले सकते हैं।
हर शक्ति स्नेह के चरणों पर चढ़ क्यों न जाए,
इसलिए उदय का क्षण जो आने वाला है,
पंछी उसमें उल्लास, गीत यदि नहीं गाये-
तो धरती से नभ तक की सारी सृष्टि व्यर्थ,
तो नभ से धरती तक का वातावरण लाज,
तुम उदय काल में मौन नहीं रह जाना मन,
कल के जैसा निकलेगा सूरज अभी आज।

उदय का क्षण

कवि - भवानीप्रसाद मिश्र

1. परिवर्तन का क्या अर्थ है? परिवर्तन से हम प्राण-शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते है? [2]
2. उदय के क्षण में क्या-क्या होता है? कवि ने पक्षियों को क्या करने को कहा है? [2]
3. उदय के क्षण में कवि ने हमें क्या करने के लिए प्रेरित किया है और क्यों? [3]

4. कल के जैसा निकलेगा सूरज अभी आज - पंक्ति के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं। [3]

Q.15 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

मेरे नए खिलौने लेकर,
चले न जाएँ वे अपने घर।
चिंतित हो उठा, किन्तु फिर,
पूछा शिशु ने उसके बाद।'

फिर क्या होगा उसके बाद
कवि - बालकृष्ण राव

1. मेरे नए खिलौने लेकर .....पंक्तियों द्वारा कवि ने बालक के किस भाव को दर्शाया है, इससे बालक के स्वभाव का कौन-सा पक्ष हमारे सामने प्रस्तुत होता है? [2]
2. बच्चा अपनी माँ से प्रश्न क्यों पूछ रहा है पिता या किसी अन्य से क्यों नहीं? [2]
3. बच्चे का बार-बार प्रश्न पूछना उसके किस स्वभाव का परिचय देता है? बाल मनोविज्ञान के आधार पर समझाइये? [3]
4. इस कविता के माध्यम से कवि ने क्या समझाना चाह है? क्या यह सत्य है? [3]

Q.16 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,

करो प्रेम पर प्राण निछावर।

देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से वि्लसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।

स्वदेश प्रेम

कवि - रामनरेश त्रिपाठी

1. कवि ने सच्चे प्रेम के विषय में क्या बताया है तथा क्यों? [2]
2. देश-प्रेम से किसका विकास होता है तथा किस प्रकार? समझाकर लिखिये। [2]
3. देश-प्रेम क्या है? कविता के संदर्भ में समझाकर लिखिये। [3]
4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए : [3]
   तृप्ति, आत्मबलि, निर्भर, पुण्यक्षेत्र, अमल, विलसित।

Solution

I.C.S.E

कक्षा : 10

हिन्दी – 2016

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

Answers to this Paper must be written on the paper provided separately.

You will not be allowed to write during the first 15 minutes.

This time is to be spent in reading the question paper.

The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers

---

*This Paper comprises of two sections ; **Section A** and **Section B.***

*Attempt **All** the questions from **Section A.***

*Attempt any **four** questions from **Section B**, answering at least **one** question each from the **two** books you have studied and any **two** other questions.*

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION – A (40 Marks)

Attempt all questions

Q.1 Write a short composition in **Hindi** of approximately **250** words on any **one** of the following topics : [15]

निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर **हिन्दी** में लगभग **250** शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए :

(i) पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से फैशन एवं प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याओं का जन्म हो रहा है तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

नित नए-नए परिधानों से अपने को सँवारना और अपने आपको अति आकर्षक दिखाना ही फैशन है। फैशन के पीछे मूलभूत कारण आकर्षकता और प्रभावशीलता की होड़ है। फैशन किया ही इसलिए जाता है लोग उसे देखें और आश्चर्यचकित हों। वैसे तो प्रत्येक युग में फैशन का बोलबाला रहा है। पर आधुनिक युग में तो यह अपने चरम पर है। आज समय और परिस्थितियाँ इतनी परिवर्तित हुई हैं कि इस बदलाव का सीधा और साफ असर युवाओं पर नजर आ रहा है। अतिश्योक्ति नहीं होगी अगर यह कहा जाये कि न सिर्फ युवा बल्कि बच्चे भी इस फैशन से अछूते नहीं हैं। आज हम बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में फैशन के प्रति सजगता देख सकते हैं। जिस तीव्रता से फैशन के प्रति लोगों में आकर्षण बढ़ा है और हर बात को फैशन के नाम पर सहजता से लेने का प्रयास होता वह निश्चित रूप से शुभ संकेत तो कतई नहीं है। फैशन को बढ़ावा देने के अनेकों कारण हो सकते हैं। परंतु हमारे देश में पश्चिमी सभ्यता के कुछ ज्यादा ही प्रभाव है। हम पश्चिम की देखा देखी में अपने वास्तविक परिधानों और वेशभूषा को भूलते जा रहे हैं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हर एक देश की जलवायु, भौगोलिक परिस्थिति आदि पर उस देश का पहनावा निर्भर करता है। फैशन एक प्रकार का मीठा विष है जिसकी चपेट में हमारी युवा पीढ़ी अंधकार की गर्त में डूबी जा रही है। फैशन अवश्य करो परंतु उसके शिकार मत बनो। आज हमारी खासकर युवा पीढ़ी फैशन की इस अंधी होड़ में अपने संस्कार, सभ्यता व संस्कृति को शने-शने भूलती जा रही। शालीनता और सादगी से उन्हें परहेज होता जा रहा है। अब तो हद यह हो गई है कि परिधानों से आप लड़का और लड़की में अंतर भी नहीं कर पाते। आज तो लड़के भी कान छिदवाने और लंबे बाल रखने लगे हैं। लड़कियाँ भी लड़कों

के समान ही वेशभूषा धारण करने लगी है। भारतीय परिधानों को आउट डेटेट कहकर नकार देते हैं।

फैशन की इस प्रवृत्ती के कारण कई तरह के अपराध भी होते है और हमारे नैतिक मूल्यों का भी हास्र होता है। आज बड़े-बड़े व्यापारिक संस्थान लाभ कमाने हेतु विभिन्न प्रकार के फैशन से संबंधित विज्ञापन देते हैं। इसके प्रचार-प्रसार में पत्रिकाएँ, टेलीविजन आदि भी पीछे नहीं रहते। चैनलों पर प्रसारित होने वाले फैशन संबंधित कार्यक्रमों में आपत्तिजनक वेशभूषा में मॉडलों को रैंप पर कैटवाक करते हुए दिखाया जाता है। फिल्मों में कहानी से ज्यादा फैशन को प्रमुखता से दिखाया जाना है। एक तरफ जहाँ महिलाओं में धारावाहिकों के पात्रों के परिधान और डिजाइनर के कपड़े चर्चा का केन्द्र बनते तो दूसरी तरफ युवाओं के बीच हर उस नई आने वाली फिल्मों में इस्तेमाल किये गये फैशनेबल कपड़ें से लेकर जूते या फिर कोई नई तकनीक के इलेक्ट्रोनिक आइटम चर्चा का केन्द्र बनते। ये कुछ कारण है जिससे हमारी सामजिक और नैतिकमूल्यों का पतन होता है।

ये भी सर्वविदित सत्य है कि इस फैशन से छुटकारा पाना सरल नहीं है लेकिन यदि फैशन को मर्यादा में रहकर किया जाय तो यह बुरा भी नहीं है। अत: हमें चाहिए कि हम गलत और सही की पहचान कर ऐसे फैशन को अपनाए जिससे हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कार न छूटे। सभ्यता और संस्कृति के अनुसार बदलने वाले रंग-ढंग, सुंदर दिखने के लिए अपनाए गये नए शालीन तरीके ही फैशन हैं।

(ii) "सादगी भी लोगों के दिलों में अमिट छाप छोड़ सकती है" कथन को ध्यान में रखते हुए अपने देश के किसी ऐसे व्यक्तित्व के विषय में लिखिए जिन्होंने 'सादा जीवन उच्च विचार' को आधार मानकर अपना जीवन बिताया,आपके ऊपर उस व्यक्तित्व का प्रभाव किस प्रकार का रहा यह भी स्पष्ट कीजिए।

आज की इस व्यस्ततम दिनचर्या में मानव अपने जीवन मूल्यों से कोसों दूर जा रहा है। मनुष्य को यदि मानसिक शांति और आत्मिक संतोष को प्राप्त करना है तो उसे एक बार पुन: सादा-जीवन और उच्च विचारों जैसे सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाना होगा। एक समय था जब लोग सादा-जीवन और उच्च विचारों में विश्वास रखते थे इसलिए उनका जीवन भी असीम शांति से भरा हुआ था। हमारे ऋषि-मुनि सुदूर जंगलों कम से कम साधनों में भी खुशहाल जीवन व्यतीत करते थे।

हमें हमारे इतिहास में अनेकों ऐसे महापुरुषों के उदहारण मिलते हैं जिन्होंने ता-उम्र सादा-जीवन और उच्च विचार सिद्धांत का न केवल पालन किया बल्कि इस के जरिए देश और समाज का उत्थान भी किया।

ऐसे ही विचारों के धनी हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री भी थे। बचपन से ही सीमित साधनों में पले-बढ़े। प्रधानमंत्री के पद पर पहुँचने के बाद भी उनका रहन-सहन सीधा और सादा ही रहा।

कहा जाता है एक बार हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को विदेश यात्रा पर जाना था। उनके पत्नी व पुत्र ने सोचा कि शास्त्री जी के लिए नया कोट बनवा दिया जाए क्योंकि उनका कोट काफी पुराना हो चुका था। बाजार से एक बढ़िया धारी वाला काले कोट का कपड़ा मँगवाया गया और दर्जी को बुलाकर शास्त्रीजी के सामने खड़ा कर दिया। दर्जी ने शास्त्री जी का नाप लेकर अपनी डायरी में नोट कर लिया और कोट के कपड़े का लिफाफा लेकर जाने लगा तो शास्त्री जी ने उससे धीरे से कुछ कहा। कुछ दिनों पश्चात जब टेलर कोट का लिफाफा लेकर आया तो उसमें से कोट निकाला गया। पर यह क्या? उसमें तो वही पुराना कोट निकला जो शास्त्रीजी पहनते थे। उनकी पत्नी व पुत्र यह देखकर दंग रह गए पर वह दर्जी से क्या पूछते? दर्जी के जाने के बाद उनके पुत्र ने पूछा

- 'बाबूजी यह क्या माजरा है? तो वह मुस्कुराते हुए बोले कि अभी तो मेरा पुराना कोट ही पहनने लायक है। इसलिए वह कपड़ा मैंने वापस करवा कर उन पैसों को जरूरतमंद विद्यार्थियों में बँटवा दिया है। सादा जीवन के साथ ऐसे उच्च विचार थे हमारे शास्त्री जी के।

इस घटना ने मेरे मन पर ऐसी अमिट छाप बना ली कि आज मै जब तक कोई चीज अति आवश्यक न हो तब तक नहीं खरीदता। इसके पहले मैं अपने माता-पिता से कभी भी किसी भी चीज की माँग कर देता था और उनके न देने पर उन्हें परेशान करता रहता था। अपनी विद्यालय से संबंधित वस्तुओं की भरमार होते हुए भी संग्रह करता रहता था। परंतु आज मैं अपने पास पड़ी अतिरिक्त वस्तुओं को किसी जरूरतमंद को दे देता हूँ। सच मैं शास्त्रीजी ने मेरी जीवन की जीवनधारा को ही बदल दिया।

(iii) योग के माध्यम से हम शरीर तथा मन दोनों को स्वस्थ कर सकते हैं, जीवन में योग की अनिवार्यता तथा उससे मिलने वाले लाभों का वर्णन करते हुए अपने विचार लिखिए।

पतंजली योग दर्शन के अनुसार - योगश्चित्तवृत्त निरोधः अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। योग धर्म, आस्था और अंधविश्वास से परे एक सीधा विज्ञान है। योग जीवन जीने की एक कला है। योग शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। पहला है - जोड़ और दूसरा है समाधि। जब तक हम स्वयं से नहीं जुड़ते, समाधि तक पहुँचना कठिन होगा अर्थात् जीवन में सफलता की समाधि पर परचम लहराने के लिये तन, मन और आत्मा का स्वस्थ होना अति आवश्यक है और ये मार्ग और भी सुगम हो सकता है, यदि हम योग को अपने जीवन का हिस्सा बना लें।

आज कंप्यूटर की दुनिया में दिन-भर उसके सामने बैठ-बैठे काम करने से अनेक लोगों को कमर दर्द एवं गर्दन दर्द की शिकायत एक आम बात हो

गई है। इसके साथ ही आज के इस प्रतिस्पर्धा युग में मानव की जीवन-शैली ने मनुष्य को तनाव, थकान तथा चिड़चिड़ाहट से भी भर दिया है। योग में ऐसे अनेक आसन हैं जिनको जीवन में अपनाने से कई बीमारियाँ समाप्त हो जाती हैं और खतरनाक बीमारियों का असर भी कम हो जाता है। 24 घंटे में से महज कुछ मिनट का ही प्रयोग यदि योग में उपयोग करते हैं तो अपनी सेहत को हम चुस्त-दुरुस्त रख सकते हैं। फिट रहने के साथ ही योग हमें पॉजिटिव एर्नजी भी देता है। योग से शरीर में रोग प्रतिरोध क्षमता का विकास होता है।

तनाव अपने आप में एक बीमारी है जो कई अन्य बीमारियों को निमंत्रण देता है। इस तथ्य को चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करता है। योग का एक महत्वपूर्ण फायदा यह है कि यह तनाव से मुक्ति प्रदान करता है स्मरण शक्ति एवं बौद्धिक क्षमता जीवन में प्रगति के लिए प्रमुख साधन माने जाते हैं। योग से मानसिक क्षमताओं का विकास होता है और स्मरण शक्ति पर भी गुणात्मक प्रभाव होता है

योग से शरीर मजबूत और लचीला होता है। योग मांसपेशियों को सुगठित और शरीर को संतुलित रखता है। इसलिए आज योग रोजमर्रा की जरुरत बन गया है।

(iv) एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो :

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

यह कवि इकबाल द्वारा लिखी गई पंक्तियाँ है। यह पंक्तियाँ उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ाने के उद्देश्य से लिखा था। आज लेकिन परिवेश बदलता जा रहा है। लोग धर्म और जाति के नाम पर इंसानों को आपस में बाँट रहे हैं। बिना वजह दूसरों की बातों में आकर दंगे और फसादों में शामिल होकर स्वयं का ही नुकसान करते हैं।

इसी पर आधारित यह छोटी-सी कहानी है कि एक गाँव में दो मित्र की दोस्ती के बड़े चर्चे थे। उनके नाम थे अमर और असीम। एक हिंदू था और एक मुसलमान। दोनों में बचपन से ही बड़ा प्यार था। उनके घरवालों ने कई बार उनकी दोस्ती पर आपत्ति दिखाई पर इन्होंने किसी की न सुनी। दोनों बड़े होकर अपने घरवालों का कारोबार सँभालने लगे। एक दिन गाँव में कुछ राजनैतिक कारणों तथा आपसी मतभेद से हिंदू तथा मुसलमानों में मनमुटाव हो गया। लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए। अचानक किसी ने अली के घर आग लगा दी। अमर ने जैसे ही सुना वह अपने दोस्त की मदद के लिए भागा परंतु सभी ने उसे रोकने का प्रयास किया कि यदि वह वहाँ जाएगा तो वे लोग तुम्हें मार देंगे। लेकिन अमर ने किसकी नहीं सुनी और अली के घर, परिवार और सामान को जलने से बचा दिया। फिर दोनों ने मिलकर गाँव वालों को समझाया कि - 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना'।

दुनिया के सभी मजहब आपस में प्यार मोहब्बत और भाई चारे की शिक्षा देते है। सभी धर्मग्रंथ भी मानवता और आपसी प्यार की ही शिक्षा देते हैं। दान-धर्म एवं जरूरत मंदों की सहायता करना मानो यह तो सभी धर्मों का संदेश है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करना चाहिए परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा देश धर्म निरपेक्ष लोकतांत्रिक सिद्धांत का पालन करते हुए सभी मतों का आदर एवं सन्मान करता है। आज विश्व में धर्म के नाम पर खून खराबा हो रहा है। कुछ लोग अपने व्यक्तिगत एवं राजनैतिक फायदे के लिए भोले-भाले लोगों की धार्मिक भावनाओं को आहत करते है।

आज भी हम देश में कई ऐसे स्थान देख सकते हैं जहाँ जाति-पाति को लेकर कोई झगड़ा नहीं है सभी लोग मिलजुलकर एक साथ सभी धर्मों के त्योहार और खुशियों में शामिल होते हैं। हमें इस प्रकार की खबरों को को देश के कोने कोने तक पहुँचाना चाहिए जिससे लोग अपनी संकुचित धार्मिक और जातीय विचारधाराओं से ऊपर उठे और देश के हित में काम करें। और कवि इकबाल की पंक्तियों को हमेशा याद रखें।

(v) नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर उसका परिचय देते हुए कहानी अथवा लेख लिखिए, जिसका सीधा संबंध चित्र से होना चाहिए।

उपर्युक्त चित्र में हमें दो छोटी बालिकाएँ दिखाई दे रही हैं ये बालिकाएँ एक बहते पानी के नल के सामने खड़ी हैं और बड़ी की प्रसन्नचित्त नजर आ रही हैं। इस चित्र को देखकर मुझे इन बच्चियों की चेहरे की ख़ुशी हमारे जीवन में 'जल ही जीवन है' के सत्य को चरितार्थ करती है। प्रकृति ने अपने अनमोल खजाने से इस धरती को भर दिया है, उसी अनमोल खजाने में से जल भी एक है। हमारे मानव शरीर में करीब दो-तिहाई जल ही है। पृथ्वी पर पनपने वाले हर एक जीव, पौधे के लिए जल एक आवश्यक वस्तु है। जल हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

लेकिन दुर्भाग्य कि बात है कि संसार के कई हिस्सों में लोगो को सेहतमंद रहने के लिए जितना पानी जरूरी है वह उन्हें मिल नहीं पाता। बहुत बार लोगों को पानी के लिए मीलों चलना पड़ता है और तब भी उन्हें जो पानी मिलता है वह पीने के लिए सुरक्षित नहीं होता।

जल के बिना हमारे जीवन की कल्पना करना भी कठिन है। परंतु विडंबना देखिए मानव जल का महत्त्व समझते हुए भी इस अमृततुल्य जल को दूषित करते जा रहा है। जल की बर्बादी और जल में बढ़ता प्रदूषण संकेत है कि आने वाले दिनों में मनुष्य को इसके भयंकर परिणाम भुगतने पड़ेगे। इसलिए जीवन को पोषित करने वाले इस अमृत का संरक्षण अति आवश्यक है।

Q.2 Write a letter in **Hindi** in approximately **120** Words on any **one** of the topics given below : [7]

निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर **हिन्दी** में लगभग **120** शब्दों में पत्र लिखिए :

(i) आज टेलीविजन द्वारा विभिन्न चैनलों पर अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र से संबंधित कार्यक्रम दिखाकर जनता को भ्रमित किया जा रहा है। भारत सरकार के सूचना एवम् प्रसारण मंत्री को इसकी जानकारी देते हुए ऐसे कार्यक्रमों पर रोक लगाने का अनुरोध कीजिए।

सेवा में,

सूचना एवम् प्रसारण मंत्री

21, मदर टेरसा क्रिसेन्ट

नई दिल्ली

विषय : अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र से संबंधित कार्यक्रमों पर रोक लगाने हेतु पत्र।

महोदय

इस पत्र द्वारा में आपका ध्यान आज टेलीविजन द्वारा विभिन्न चैनलों पर अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र से संबंधित कार्यक्रमों की ओर दिलाना चाहता हूँ। आए दिन जिस चैनल पर आप नजर डाले कोई न कोई विज्ञापन तंत्र-मंत्र से ही संबंधित होता है कहीं कोई धागा, अँगूठी, तावीज बेच रहा है तो कहीं कोई धन लाभ से सबंधित यंत्र। इस तरह के विज्ञापनों और कार्यक्रमों ने किसी भी चैनल को अछूता नहीं छोड़ा है यहाँ तक की समाचार चैनल भी इस तरह के कार्यक्रमों को बढ़ावा दे रहे हैं। आज जहाँ हमारा देश सभी क्षेत्रों में अपना परचम फहरा रहा है वहाँ इस प्रकार के कार्यक्रम लोगों को शंकित और भ्रमित करते हैं। टेलीविजन आधुनिक युग का ऐसा सशक्त माध्यम जो जन जागरण करने तथा समाज में व्याप्त रूढ़ियों,अंधविश्वासों तथा बुराईयों

को मिटाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुर्भाग्य से आज टेलीविजन के अनेक चैनलों पर अंधविश्वास तथा तंत्र-मंत्र से संबंधित कार्यक्रमों की ऐसी भरमार हो गई है जिससे न केवल लोग प्रभावित बल्कि भ्रमित भी हो रहे हैं।

अत: आपसे मेरा अनुरोध है कि समस्या की ओर तुरंत संज्ञान लेते हुए इस तरह कार्यक्रमों को रोक लगाने का उचित प्रबंध करें।

सधन्यवाद।

भवदीय

कमल शर्मा

2/42, सरला निवास

आजाद चौक

माणिकपुर

चंडीगढ़

दिनाँक - 27 फरवरी 2015

(ii) आपकी चचेरी बहन जो गाँव ने रहती है, उसकी दसवीं के बाद शिक्षा रोक दी गई है अत: उसकी आगे की पढ़ाई जारी रखने का निवेदन करते हुए अपने चाचाजी को पत्र लिखिए जिसमें नारी शिक्षा की आवश्यकता और लाभों की भी चर्चा कीजिए।

102, मोहनगंज

गली नं - 3

कानपुर

दिनाँक - 27 जून 2015

आदरणीय चाचाजी

सादर चरण स्पर्श।

चाचीजी का पत्र मिला बता रही थी कि बहन मंगला ने दसवीं की परीक्षा अच्छे अंकों से पास कर ली है। यह सुनकर मन अत्यंत प्रसन्न हो उठा पर दूसरी ओर जैसे ही यह पता चला कि आपने उसे आगे की पढ़ाई के लिए आपने मना कर दिया है और मन दुखी हो उठा। क्यों, चाचाजी आपने बहन मंगला के प्रति ऐसा निर्णय कैसे ले लिया? आपको पता ही है कि मंगला एक होनहार छात्रा होने के साथ घर और बाहर के सभी कामों में निपुण है। चाचाजी हम 21 सदी में पहुँच गए जहाँ लड़का और लड़की एक समान है। आज ऐसा कौन-सा कार्य है जो लड़की नहीं कर सकती है। आपको तो पता ही है चाचाजी एक नारी के शिक्षित होने से पूरा एक समाज शिक्षित होता है। नारी शिक्षा से न केवल वह शिक्षित होती बल्कि वह अपने अधिकारों के प्रति भी सचेत और सावधान होती है। भविष्य में कोई उसे छल या ठग नहीं सकता। आप स्वयं मुझसे बड़े और विद्वान है अत: मैं केवल आपसे अनुरोध ही कर सकती हूँ कि आप पुन: एक बार अपने निर्णय पर विचार करें और बहन मंगला को आगे पढ़ने की अनुमति दें। शेष यहाँ सब कुशल है।

चाचीजी को मेरा प्रणाम और बहन मंगला को ढेर सारा प्यार देना।

आपकी भतीजी

पंकजा

Q.3 Read the passage given below and answer in **Hindi** the questions that follow, using your own words as far as possible :- [10]

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर **हिन्दी** में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :

बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन खेत

में जी तोड़-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी मात्र एक इच्छा थी। वह उडुपि के मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि दक्षिण कर्नाटक का प्रमुख तीर्थस्थान है। वह अपनी गरीबी के कारण तीर्थयात्रा की इच्छा पूरी नहीं कर पाता था। इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। समय के साथ-साथ हरिहर की आर्थिक स्थिति भी सुधरती गई। अब उसने तीर्थयात्रा की योजना बनाई। उसकी पत्नी ने उसके लिए पर्याप्त भोजन बाँध दिया।

हरिहर तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ उडुपि की ओर चल दिया। मार्ग में उसे एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा से कराह रहा था। जैसे ही हरिहर की नजर उस पर पड़ी, उसका हृदय करुणा से भर गया। उसने बूढ़े के पास जाकर पूछा, “बाबा, क्या तुम भी तीर्थयात्रा करने उडुपि जा रहे हो?” बूढ़े ने उत्तर दिया, “मेरा एक बेटा बीमार है और दूसरे बेटे ने भी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया। फिर मैं तीर्थयात्रा कैसे करूँ।”

हरिहर समझता था कि दिन-दुखियों की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा है इसलिए उसने उडुपि जाने से पहले बूढ़े के घर जाने का निश्चय किया। उसके साथियों ने उसे बहुत समझाया “बहुत मुश्किल से तुमने धन एकत्र किया है, अगर यह नष्ट हो गया तो फिर तुम कभी तीर्थयात्रा नहीं कर पाओगे।” हरिहर पर उनकी बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया। लेकिन इन सारे कार्यों में उसके सारे पैसे खर्च हो गए।

अब उसने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया। उसे उडुपि न जा पाने का बिल्कुल भी दुःख न था क्योंकि वह

जानता था कि उसने अपना सारा धन दिन-दुखियों की सेवा में खर्च किया था। घर पहुँचकर उसने अपनी पत्नी को सारी बातें बता दीं। पत्नी भी इस पर प्रसन्न हुई क्योंकि वह भी एक धार्मिक स्वभाव की महिला थी। उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जी उससे कह रहे थे, "हरिहर तुम मेरे सच्चे भक्त हो। तुमने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं मैं ही था। तुम्हारी परीक्षा के लिए ही मैं उस बूढ़े आदमी का वेश धारण कर आया था। तुम मेरे सच्चे सेवक हो।" इस तरह हरिहर बगैर तीर्थयात्रा पर गए पुण्य का भागीदार बना।

1. हरिहर क्या काम करता था? उसकी एक मात्र इच्छा क्या थी? [2]

   उत्तर : बहुत समय पहले एक गाँव में हरिहर नाम का एक दयालु और सीधा-सच्चा किसान रहता था। वह खेती-बाड़ी का काम करता था। वह पूरा दिन खेत में जी तोड़-तोड़ मेहनत करता था और शाम का समय ईश्वर की प्रार्थना में बिताता था। जीवन में उसकी मात्र एक इच्छा थी। वह उडुपि के मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करना चाहता था।

2. हरिहर को तीर्थयात्रा के मार्ग में कौन मिला? उसकी क्या स्थिति थी? [2]

   उत्तर : मार्ग में हरिहर को एक स्थान पर एक बूढ़ा मिला। उसकी दशा बहुत ही दयनीय थी। वह कई दिनों से भूखा-प्यासा था और पीड़ा से कराह रहा था।

3. हरिहर ने बूढ़े व्यक्ति की सहायता कैसे की? [2]

   उत्तर : हरिहर बूढ़े के घर पहुँचा। उसने सबसे पहले घर के सभी व्यक्तियों को भरपेट भोजन कराया। फिर बीमार बच्चे के लिए दवा ले आया। उसने बूढ़े को खेत में बोने के लिए बीज भी ला दिया। वह कुछ

दिन वहाँ रुका। उसने बूढ़े आदमी की सेवा की, जिससे वह कुछ दिनों में स्वस्थ हो गया।

4. हरिहर ने घर लौटने का निश्चय क्यों किया? वहाँ लौटने पर हरिहर ने क्या स्वप्न देखा? [2]

उत्तर : बूढ़े की सहायता में हरिहर के सारे पैसे खर्च हो गए। अत: हरिहर ने अपनी तीर्थयात्रा बीच में ही छोड़कर वापस घर लौटने का निश्चय किया।

उस रात हरिहर ने सपने में भगवान श्रीकृष्ण को देखा, जो उससे कह रहे थे कि हरिहर ही उनका सच्चा भक्त है। हरिहर ने उस बूढ़े आदमी की सहायता की और अपनी इच्छा का बलिदान कर दिया। वह बूढ़ा आदमी कोई और नहीं स्वयं श्रीकृष्ण ही थे। हरिहर की परीक्षा के लिए ही श्रीकृष्ण ने बूढ़े आदमी का वेश धारण किया था। श्रीकृष्ण ने यह भी कहा कि हरिहर ही उनका सच्चा सेवक है।

5. इस गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है? [2]

उत्तर : इस गद्यांश से सच्ची भक्ति की शिक्षा मिलती है। सच्ची भक्ति तीर्थयात्रा करने, दान-पुण्य करने या जप-तप करने में नहीं होता है। सच्ची भक्ति तो निस्वार्थ भाव से दीन-दुखियों की सेवा और परोपकार में होता है।

Q.4 Answer the following according to the instructions given:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए :

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए : [1]
   - लोभ - लोभी
   - इतिहास - ऐतिहासिक

2. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : [1]

- बादल - मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, पयोद
- स्वतंत्र - आजाद, मुक्त

3. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए : [1]

- उपकार - अपकार
- कोमल - कठोर
- नूतन - पुरातन
- स्वामी - सेवक

4. भाववाचक संज्ञा बनाइए : [1]

- अधिक - अधिकता, आधिक्य
- भक्त - भक्ति

5. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए : [1]

- अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना - सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर रमेश ने मानो <u>अपने पैर पर कुल्हाडी मार ली है</u>।
- बाल-बाल बचना - इतनी बड़ी दुर्घटना में सोमेश मौत के मुँह से <u>बाल-बाल बच गया</u>।

6. कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए :

(a) महाराणा प्रताप के साहस की <u>तुलना नहीं की जा सकती</u> है। [1]

(रेखांकित शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिए)

उत्तर : महाराणा प्रताप का साहस <u>अतुलनीय</u> है।

(b) मेरे घर में जो नौकर काम करता है वह भाग गया। [1]

(सरल वाक्य बनाइए)

उत्तर : मेरे घर में काम करने वाला नौकर भाग गया।

(c) राजा का सेवक बहुत बुद्धिमान था। [1]

(लिंग बदलकर वाक्य दोबारा बनाइये)

उत्तर : रानी की सेविका बहुत बुद्धिमत्ती थी।

SECTION - B (40 Marks)

Attempt four questions from this section.

You must answer at least **one** question from each of **two** books you have studied and any **two** other questions.

(**गद्य संकलन**)

Q.5 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"ऐसा मत कहो, महाराज। उम्र तो बहुत थी। पचास साठ रूपया महीना पेंशन मिलती तो कुछ और काम कहीं करके गुज़ारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गए और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।"

भोलाराम

लेखक - हरिशंकर परसाई

1. उपर्युक्त कथन किसने, किससे और कब कहा? [2]

उत्तर : उपर्युक्त कथन भोलाराम की पत्नी ने नारद से कहा। उपर्युक्त कथन तब कहा गया था, जब नारद मुनि भोलाराम के जीव को खोजने के लिए धरती पर आते हैं और उनकी पत्नी से इस विषय में बातचीत करते हैं।

2. श्रोता का संक्षिप्त परिचय दीजिये। [2]

उत्तर : श्रोता एक पौराणिक पात्र हैं, उनका नाम नारद मुनि है। उन्हें देवताओं का ऋषि माना जाता है। उनमें यह सामर्थ्य है कि वे तीनों लोकों में कहीं भी घूम सकते हैं। देवता संकट के अवसर पर उनकी सहायता लेते रहते हैं। यमराज भी भोलाराम के जीव को खोज न

पाने के कारण संकट में थे, इसलिए उन्होंने नारद मुनि से प्रार्थना की कि वो उनकी सहायता करें। नारद मुनि को इसी वजह से धरती पर आना पड़ा था।

3. श्रोता को भोलाराम के विषय में वक्ता से क्या पता चलता है? समझाकर लिखिए। [3]

उत्तर : श्रोता को पता चलता है कि भोलाराम की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। पाँच वर्ष पहले वो अपने काम से रिटायर हो चुके थे पर अब तक उन्हें पेंशन मिलनी शुरू नहीं हुई थी। उन्होंने पेंशन पाने के लिए बहुत दरख्वास्त दिए पर रिश्वत न दे पाने के कारण कोई फायदा नहीं हुआ। पाँच वर्षों में उसकी बीवी के सारे गहने बिक गए, घर के बर्तन बिक गए। अंत में चिंता और भूख के कारण भोलाराम की मृत्यु हो गयी।

4. वक्ता श्रोता को कौनसा कार्य सिद्ध करने के लिए कहाँ भेजता है और उसका क्या परिणाम निकलता है? [3]

उत्तर : भोलाराम की पत्नी उन्हें बताती है कि भोलाराम की मृत्यु गरीबी के कारण हुई है। पाँच वर्ष हो गए किन्तु भोलाराम की पेंशन नहीं मिल पायी है। परिवार के सारे सदस्य भुखमरी से मर रहे हैं। भोलाराम की पत्नी नारद मुनि से प्रार्थना करती है कि वो सिद्ध पुरुष है। कुछ ऐसा करें कि भोलाराम की रुकी हुई पेंशन मिल जाए। उसके बच्चों को भोजन मिल सके। इसका यह परिणाम निकलता है कि नारदमुनि स्वयं सरकारी दफ़्तर जाते हैं और भोलाराम की रुकी हुई पेंशन का ऑडर निकलवाने का प्रयास करते हैं।

Q.6 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

मैं खिड़की के पास जा खड़ा हो गया। बाहर लू चल रही थी। नीचे धरातल पर कुछ लोग आ जा रहे थे .... वे ऊपर से बहुत लाचार और बेचारे लग रहे थे और मेरे मन से सबके लिए सद्भावना की नदियाँ फूट रही थीं ...

चप्पल

लेखक - कमलेश्वर

1. कथन का वक्ता कौन है? वह अस्पताल क्यों गया था? [2]

उत्तर : उक्त कथन का वक्ता लेखक कमलेश्वर है। उनकी एक परिचित डॉक्टर मित्र की पत्नी जिसका नाम संध्या है। उसका गंभीर ऑपरेशन हुआ है। वो फिलहाल आल इंडिया मेडिकल इंस्टिट्यूट के आई. सी. यू. में भरती हैं तथा मृत्यु से संघर्ष कर रही हैं। लेखक उसी को देखने की औपचारिकता निभाने के लिए अस्पताल गया था।

2. वक्ता अस्पताल में जाते समय क्या सोचता है? [2]

उत्तर : लेखक अस्पताल में सोचता है कि इस संसार में कितना दुःख और कष्ट है। इस दुनिया में इंसान की मौत से एक लगातार लड़ाई चल रही है। इस दुःख, कष्ट और लड़ाई को सहने वाले सब एक जैसे ही हैं। दर्द और यातना सहने वाले इंसान-इंसान में भेद नहीं किया जा सकता है क्योंकि पूरे संसार में दूध, आँसू और खून का रंग एक जैसा ही होता है। इसी तरह से हम दुःख, कष्ट और यातना के रंगों का भी बँटवारा नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार लेखक अस्पताल में लोगों को देखकर दार्शनिक हो उठते हैं।

3. वक्ता को अस्पताल की किस मंजिल पर जाना था? लिफ्ट में जाते समय उसने किसे और किस दशा में देखा बताइए कि उसके साथ क्या घटना घटी थी? [3]

उत्तर : वक्ता को आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट की सातवीं मंजिल पर जाना था। उन्हें वहाँ अपने डॉक्टर मित्र की पत्नी संध्या से मिलने जाना था। लिफ्ट में जाते समय उसने एक छोटे बच्चे को देखा जो अस्पताल द्वारा दी हुई बहुत बड़ी-सी धारीदार कमीज़ पहने हुए अपने पिता की गोद में था। बच्चा सड़क पार करते समय एक मोटर गाड़ी से टकरा गया था जिसके कारण उसकी जांघ की हड्डी टूट गयी थी। इसलिए उसका ऑपरेशन जाने वाला था।

4. प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य लिखिए। [3]

उत्तर : 'चप्पल' कहानी लेखक कमलेश्वर द्वारा लिखी हुई कहानियों में से एक है। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य सामान्य-जन में करुणा, संवेदना, तथा परदुख:कारता के भावों को जगाना है। लेखक ने यहाँ अस्पताल के दृश्यों तथा एक छोटे से बच्चे के अपने नीली हवाई चप्पलों के मोह के जरिए उपर्युक्त भावों को बड़ी सफलतापूर्वक जगाने में सफलता पाई है।

Q 7 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''जब कभी हम वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अंदर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है। परन्तु वह चिर-स्थायी नहीं होता, इसका कारण सिर्फ यही है कि हममें भीतर दृढ़ता का मलबा तो होता नहीं। सिर्फ ख्याली महल उसके दिखलाने के लिए बनाना चाहते हैं।"

सच्ची वीरता

लेखक - सरदार पूर्णसिंह

1. सच्ची वीरता के संबंध में लेखक ने क्या बताया है? [2]

उत्तर : सच्ची वीरता शारीरिक बल का नहीं अपितु दृढ़ संकल्प, मानसिक क्षमता एवं निर्भयता का नाम है। वीरता का भाव युद्ध क्षेत्र में ही नहीं अपितु व्यक्तिगत जीवन, धार्मिक क्षेत्र, राजनीति, अर्थ व्यवस्था आदि क्षेत्रों में भी देखी जा सकती है। सच्चा वीर वही है जो निडरता के साथ अपने कर्तव्य का पालन करता है और जीवन में आने वाली बाधाओं का डटकर मुकाबला करता है। उनके प्रत्येक कार्य में नवीनता होती है और वह बाहरी दिखावे में विश्वास नहीं करता है। उनमें प्रेम, धैर्य, गंभीरता, सदगुण और लोक-कल्याण की भावना विद्यमान होती है।

2. वीरता का विकास किस प्रकार किया जा सकता है? तथा बताइए कि वीरता निराली और नई कैसे होती है? [2]

उत्तर : लेखक स्पष्ट करना चाहता है कि मूलतः वीरता एक भाव है जिसे किसी कारखाने में बनाया नहीं जा सकता। असली वीर दुनिया की बनावट और लिखावट के मखौलें के लिए नहीं जीते। वीर तो देवदार के दरख्तों की तरह जीवन के अरण्य में खुद-ब-खुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिए, बिना किसी के दूध पिलाए, बिना किसी के हाथ लगाए तैयार होते हैं। दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर खड़े हो जाते हैं। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। नयापन वीरता का खास अंग होता है। वीरता की नकल नहीं हो सकती वह हमेशा मौलिक और निराली होती है।

3. वीर पुरूषों की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं? समझाकर लिखिये। [3]

उत्तर : वीर पुरुष दयालु,परोपकारी और दृढ़ संकल्प वाला होता है। उसका मन उदार होता है तथा वह किसी परिस्थिति के समक्ष झुकता नहीं है। वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके ख्याल सबके ख्याल हो जाते हैं। सबके संकल्प उसके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

4. मीराबाई तथा महाराज रणजीत सिंह के उदाहरणों द्वारा लेखक ने क्या समझाया है? स्पष्ट कीजिये। [3]

उत्तर : राजाजी ने ज़हर के प्याले से मीराबाई को डराना चाहा। मगर मीरा ने ज़हर को अमृत मानकर पी लिया। फिर भूखे शेर और मस्त हाथी के सामने रख दी गई मगर वह जानवर भी उस देवी के चरणों की धूल को अपने मस्तक पर मल के चल दिए। मीरा के उदाहरण द्वारा लेखक समझाना चाहते है कि सच्चे वीर दुनिया के बादशाहों से नहीं डरते क्योंकि उन्हें अपने बादशाह और अपनी भक्ति पर भरोसा होता है। उसी प्रकार रणजीत सिंह ने चढ़ी हुई अटक को पार करने के लिए स्वयं अपने घोड़े को पानी में डाल दिया। कहते हैं नदी ने खुद उन्हें आगे बढ़ने के लिए रास्ता दे दिया। उनके उदहारण से यह सिद्ध होता है कि प्रकृति भी वीरों का साथ देती है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

लेखक - प्रकाश नगायच

Q.8 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"हमें युवराज न कहिए, गुरुदेव! आज चन्द्रगुप्त की स्थिति वही है जो मगध के एक साधारण नागरिक की है।" चन्द्रगुप्त ने दुःखी स्वर में कहा-" फिर भी आप विश्वास रखिए, मगध चन्द्रगुप्त का है और रहेगा। और केवल मगध हो क्यों, सारा भारतवर्ष उसका है। वह सारे भारत का है। जब तक शरीर में प्राण हैं, वह विदेशियों को भारत की पवित्र भूमि पर पाँव न रखने देगा।"

1. गुरु कौन हैं? उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]

   उत्तर : यहाँ पर गुरु राजपुरोहित विष्णु शर्मा है।
   वे चन्द्रगुप्त, वीरसेन और देववर्मा के गुरु हैं।

2. मगध की दशा में क्या परिवर्तन हुआ था तथा क्यों? [2]

   उत्तर : सम्राट समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद उनके बड़े बेटे रामगुप्त ने छलपूर्वक राजगद्दी हथिया ली थी। रामगुप्त एक अच्छा शासक नहीं था वह कायर और धूर्त था। उसके शासन में प्रजा सुखी नहीं थी। उसके शासनकाल में शकों के आक्रमण शुरू हो गए थे। पूर्व से नागराजाओं का आक्रमण तथा दक्षिण से रूद्र देव की शक्ति बढ़ने लगी थी। इस प्रकार चारों ओर से मगध पर संकट मंडरा रहा था।

3. चन्द्रगुप्त सामर्थ्यवान होते हुए भी मगध की दशा सुधारने के लिए विद्रोह क्यों नहीं करना चाहता था? समझाकर लिखिये। [3]

उत्तर : चन्द्रगुप्त सामर्थ्यवान होते हुए भी मगध की दशा सुधारने के लिए विद्रोह नहीं करना चाहता था क्योंकि इसके लिए चन्द्रगुप्त को अपने ही भाई रामगुप्त को गद्दी से हटाना होगा इससे राज्य में गृह युद्ध की संभावना बढ़ जाती थी जिसका परिणाम मगध का विनाश भी हो सकता था अत: चन्द्रगुप्त ने ऐसा नहीं किया।

4. गृह युद्ध से आप क्या समझते हैं? गृह युद्ध से देश पर क्या प्रभाव पड़ता है? उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिये। [3]

उत्तर : गृह युद्ध का अर्थ है अपने ही घर में सत्ता के लिए लड़ा गया युद्ध। यहाँ रामगुप्त ने सम्राट समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद उनके बड़े बेटे रामगुप्त ने छलपूर्वक राजगद्दी हथिया ली थी। रामगुप्त एक अच्छा शासक नहीं था वह कायर और धूर्त था। अब ऐसे में चन्द्रगुप्त की अपने भाई रामगुप्त को गद्दी से हटाने के लिए उसका वध करना होगा जिसके परिणामस्वरूप राज्य में गृह युद्ध भड़क सकता था और इसका अनुचित फायदा दुश्मन राजा उठाकर मगध पर अपना अधिकार जमा सकते थे।

Q.9 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"और फिर महादेवी को इसकी चिंता क्यों? आप मगध के विशाल साम्राज्य की महादेवी हैं। आपके एक संकेत पर मगध की सेना ही नहीं, प्रजा भी हँसते-हँसते प्राण निछावर कर सकती है।"

1. महादेवी किसे कहा गया है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिये। [2]

उत्तर : महादेवी सम्राट रामगुप्त की पत्नी है। वह पंजाब के शासक की पुत्री थी, जिसे चन्द्रगुप्त ने युद्ध में पराजित कर प्राप्त किया था।

चन्द्रगुप्त की इस वीरता पर प्रसन्न होकर सम्राट समुद्रगुप्त ने महादेवी का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ तय कर दिया था। परंतु सम्राट समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात रामगुप्त जबरन महादेवी से विवाह कर लेता है।

2. उक्त कथन की वक्ता कौन है? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]

उत्तर : उक्त कथन की वक्ता देवसेना है। देवसेना महादेवी की दासी है।

3. महादेवी चिंतित क्यों है? देवसेना उसे क्या समझाती है? स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर : महादेवी के पिता को युद्ध में पराजित कर चन्द्रगुप्त ने महादेवी को प्राप्त किया था। चन्द्रगुप्त ने उसके पिता को वचन भी दिया था कि वह उसके मान-सम्मान की रक्षा करेगा। पाटिल पुत्र पहुँचने के बाद महादेवी का चन्द्रगुप्त के प्रति प्रेम और बढ़ गया था जब सम्राट समुद्रगुप्त ने उसका विवाह चन्द्रगुप्त से करना तय कर दिया था। परंतु भाग्य ने साथ न दिया और उसका विवाह जबरन रामगुप्त से हो गया जो महादेवी को अस्वीकार्य था। इस पर देवसेना उन्हें समझाते हुए कहती है कि नारी कोई वस्तु नहीं है। वह पुरुष की सेवा करने के बाद भी सम्मान पाने की अधिकारी है। वह किसी की दासी नहीं है। देवसेना कहती है कि वे अब मगध साम्राज्य की रानी है और सभी के मन में उनके लिए अपार स्नेह और सम्मान है तो वे व्यर्थ में चिंतित न रहें।

4. नारी के जीवन के बारे में महादेवी के क्या विचार हैं? समझाकर लिखिये। [3]

उत्तर : नारी जीवन के बारे में महादेवी के वैसे तो उच्च विचार हैं। परंतु उसे इस बात का दुःख सालता रहता है कि नारी का सम्मान करने की बजाय बार-बार उसे दाँव पर लगाकर अपमान किया

जाता है। नारी को इतनी पराधीन बना दिया गया है कि उसका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं है। उसके शासकों की शर्तों को पूरा करने का माध्यम भर बना दिया गया है।

Q.10 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"उसके लिए चंद्रगुप्त को बुलाने का अर्थ था चंद्रगुप्त से सहायता की भीख माँगना अर्थात चंद्रगुप्त के आगे झुकना और वह उसे अपना अपमान समझता था। साथ ही उसे सबसे अधिक भय और चिंता ध्रुवस्वामिनी की ओर से रही।"

1. चंद्रगुप्त को बुलाना क्यों आवश्यक हो गया था? उसे कौन बुलाना नहीं चाहता था? [2]

उत्तर : मगध सम्राट रामगुप्त तथा उसकी सेना को चारों ओर से घिरी घाटी में शकराज की सेना द्वारा घेरा जा चुका था। अब सम्राट रामगुप्त के पास इस सब से निकलने का कोई मार्ग शेष रह नहीं गया था। वह स्वभाव से ही कायर था अत: ऐसे में उसे सलाह दी गई कि वे अपने भाई चन्द्रगुप्त को सहायता के लिए बुलवा लें।

2. मंत्रियों तथा सेनाध्यक्षों ने क्या प्रस्ताव रखा और क्यों? [2]

उत्तर : मंत्रियों तथा सेनाध्यक्षों ने सम्राट रामगुप्त के सामने चन्द्रगुप्त को बुलाने का प्रस्ताव रखा क्योंकि उन सब की राय यह थी कि ऐसी विकट परिस्थिति से यदि उन्हें कोई बचा सकता है तो वह केवल चन्द्रगुप्त है। चन्द्रगुप्त वीर, साहसी और विवेकशील था और वह अपने साम्राज्य को बचाने भी जरुर आएगा इसलिए सभी चाहते थे कि राज्य पर आए संकट से बचाने के लिए चन्द्रगुप्त को बुलाना ही एकमात्र उपाय था।

3. चंद्रगुप्त से सहायता माँगना अपमान क्यों समझा जा रहा था? समझाकर लिखिये । [3]

उत्तर : सम्राट रामगुप्त ने अपने पिता के देहांत की खबर तक चन्द्रगुप्त तक नहीं पहुँचाई थी और राजसिंहासन पर कब्जा कर दिया था जबकी उसके पिता ने पहले ही चन्द्रगुप्त को युवराज घोषित कर दिया था। इतना ही नहीं रामगुप्त ने चन्द्रगुप्त की होनेवाली पत्नी से जबरन विवाह भी कर देता है। गत पाँच वर्षों से रामगुप्त का चन्द्रगुप्त से कोई संबंध भी नहीं रहा था इसलिए चंद्रगुप्त से सहायता माँगना अपमान समझा जा रहा था।

4. रामगुप्त के मन में ध्रुवस्वामिनी की ओर से भय के क्या कारण थे? समझाकर लिखिये। [3]

उत्तर : रामगुप्त ने ध्रुवस्वामिनी और उसकी दासी के बीच हुए वार्तालाप को सुन लिया था कि अब भी ध्रुवस्वामिनी चन्द्रगुप्त से ही प्यार करती है। जबरन विवाह करने के बाद भी वह ध्रुवस्वामिनी का प्रेम अब तक प्राप्त नहीं कर पाया था। ऐसे समय में यदि चन्द्रगुप्त को यहाँ बुलाया जाता है और ध्रुवस्वामिनी और चन्द्रगुप्त का आमना-सामना हो जाता है तो वे दोनों फिर से एक हो सकते हैं और यही रामगुप्त के मन में ध्रुवस्वामिनी की ओर से भय का कारण था।

एकांकी सुमन

Q.11 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

तुम तो बिना बात ही बिगड़ उठते हो! देखो बिरादरी का मामला है। आज तुम न जाओगे उसके यहाँ, तो कल वे भी तुम्हारे यहाँ नहीं आएँगे। आखिर तुम्हें भी तो बेटे-बेटियों की शादी करनी है।

मेल-मिलाप

लेखक - देवराज 'दिनेश'

1. वक्ता कौन है और उसने यह किस संदर्भ में कहा है? [2]

   उत्तर : यहाँ पर वक्ता मंगलसिंह की पत्नी राधा है। वह वक्ता को अपने भाई की बेटी के विवाह में जाने के लिए समझाती है कि भाई-भाई के संबंध इस प्रकार से तोड़े नहीं जाते हैं। बेटियाँ तो सभी की साझी होती है। यदि वे इस विवाह में नहीं जाते हैं तो उनके ही परिवार की बदनामी होगी। अत:अपनी जिद्द को छोड़कर, समझदारी दिखाते हुए समाज और बिरादरी का सम्मान करते हुए वक्ता को इस विवाह में शामिल होना ही चाहिए।

2. वक्ता को बिरादरी की चिंता क्यों है? वह अपने पति को क्या समझाना चाहती है। [2]

   उत्तर : वक्ता राधा अर्थात् मंगलसिंह की पत्नी है। उसे इस बात की चिंता है कि अभी कुछ ही दिनों बाद स्वयं उसकी बेटी का विवाह होने वाला है यदि वे इस समय अपने देवर की बेटी के विवाह में शामिल नहीं होंगे तो उनकी बिरादरी क्या कहेगी क्योंकि गाँव में तो ऐसी बातों को कुछ ज्यादा ही तूल दिया जाता है। इससे उनके परिवार की केवल बदनामी ही होगी इसलिए वह अपने पति को

समझाती है कि घरेलू दुश्मनी और पारिवारिक व्यवहारों को अलग-अलग रखना चाहिए। वैसे भी बेटियाँ तो सभी की साझी होती है। यदि वे इस विवाह में नहीं जाते हैं तो उनके ही परिवार की बदनामी होगी। अत:अपनी जिद्द को छोड़कर,समझदारी दिखाते हुए समाज और बिरादरी का सम्मान करते हुए वक्ता को इस विवाह में शामिल होना ही चाहिए।

3. श्रोता को वक्ता की बातें अच्छी क्यों नहीं लगती? वह बिरादरी के विषय में क्या कहता है? [3]

उत्तर : यहाँ पर श्रोता मंगलसिंह है उसे अपनी पत्नी की बात इसलिए अच्छी नहीं लगती क्योंकि वह भाईयों के बीच की दुश्मनी भुलाने को कहती है और मेल-मिलाप से रहने की सलाह देती है।
वह बिरादरी के बारे में ख्याल रखता है कि वह उनके सहयोग के बिना भी सब-कुछ कर सकता है और इसका कारण यह है कि वह खाता-पीता किसान है और बड़े ही हठी स्वभाव का होने के कारण वह किसी की बात नहीं मानता है। किसी पर आश्रित न होने के कारण भी उसका किसी के साथ उसका कोई लेना-देना नहीं है। और इसलिए ही वह अपनी मर्जीनुसार चलता है यहाँ तक कि वह अपनी पत्नी के अच्छे सुझावों को भी नहीं मानता है।

4. पास-पड़ोस में रहने के लिए मनुष्य का व्यवहार कैसा होना चाहिए? तथा इस एकांकी से क्या शिक्षा मिलती है? [3]

उत्तर : पास-पड़ोस में रहने के लिए मनुष्य का व्यवहार मेल-मिलाप से परिपूर्ण होना चाहिए। यही इस कहानी से शिक्षा से भी मिलती है। मेल-मिलाप से ही गाँव, समाज और देश की प्रगति निहित है। आपसी वैमनस्य से केवल नुकसान ही होता है। मनुष्य को यदि प्रगति करनी है तो उसे सभी के साथ मेल-मिलाप से रहना चाहिए।

Q.12 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

''रोने से उन्हें दुःख होगा। उन्होंने प्राण दे दिए, पर शासन और जनता का संतुलन ठीक कर दिया। वे शहीद हो गये, पर दूसरों को बचा गए। नगर में अब बिलकुल शांति है। सब मौन सगर्व इन बलिदानों की चर्चा कर रहे हैं। सब शोक संतप्त हैं।''

सीमा-रेखा

लेखक - विष्णु प्रभाकर

1. वक्ता कौन है? उसके अनुसार कौन शहीद हो गया? [2]

उत्तर : यहाँ वक्ता शरत चंद्र है। उनके अनुसार सुभाष चंद्र शहीद हो गया है।

2. बलिदान किसने दिया? बताइये उनके बलिदान पर गर्व का अनुभव क्यों किया जा रहा था? [2]

उत्तर : जननेता सुभाष चंद्र और कैप्टन विजय चंद्र ने बलिदान दिया और इन्हीं दोनों के बलिदान पर गर्व अनुभव किया जा रहा है।

3. शासन और जनता के बीच का संतुलन कब बिगड़ता है और उसे कैसे ठीक किया जा सकता है? अपने विचार व्यक्त कीजिये। [3]

उत्तर : शासन और जनता के बीच असंतुलन तब बिगड़ता है जब दोनों ही अपने कर्तव्यों को तो भुला देते हैं परंतु अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहते हैं। इस प्रकार के असंतुलन को दूर करने के लिए शासक और जनता दोनों को ही अपने-अपने दायित्वों को निभाना होगा। प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने कार्यों को जिम्मेदारी और ईमानदारी से करें तो इस प्रकार की अव्यवस्था नहीं फैलेगी।

4. किसी भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था में हड़ताल या प्रदर्शन आदि करना कहाँ तक न्यायसंगत है? समझाकर लिखिये। [3]

उत्तर : किसी भी प्रजातांत्रिक व्यवस्था में हड़ताल या प्रदर्शन आदि करना न्यायसंगत बिल्कुल भी उचित नहीं है। देश और देशवासियों दोनों को अपने-अपने कर्तव्यों का ध्यान रहना चाहिए। हड़तालें, तोड़फोड़, आगजनी, लूटपाट, सांप्रदायिक दंगों से न जनता का भला होता है और न देश का। राष्ट्र की संपत्ति को नुकसान पहुँचाना किसी के भी हित में नहीं है।

Q.13 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"एक पखवारे से बराबर लड़ाई हो रही है - अतरौलिया, आजमगढ़, मगहर - हर जगह कुंवरसिंह, हर जगह तूफ़ान, मगर गंगा मैया ने कैसी शक्ति उस बूढ़े कुंवरसिंह के बदन में फूँक दी है। बिजली की जोत है कि पल में चकाचौंध चमक कर दे। सावन की झड़ी है कि जो थमने का नाम ही न ले।"

विजय की वेला

लेखक - जगदीशचन्द्र माथुर

1. एक पखवारे का क्या तात्पर्य है? लड़ाई किससे और क्यों हो रही थी? [2]

उत्तर : एक पखवारे का अर्थ 15 दिन है। सन् १८५७ में जब अंग्रेजी हुकुमत के विरुद्ध विद्रोह की आग भडक उठी थी, तो बिहार में भी आज़ादी के उन दीवानों ने आरा के राजा कुँवर सिंह ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई का बिगुल बजा दिया था।

2. सावन की झड़ी है कि जो थमने का नाम ही न ले - पंक्ति से एकांकीकार का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिये। [2]

उत्तर : उपर्युक्त पंक्ति एकांकीकार का तात्पर्य महाराज कुँवरसिंह की अद्भुत शक्ति व कर्मशीलता से है। कुँवरसिंह अस्सी वर्ष के होने के

बावजूद अंग्रेजों को मात-पर-मात देते आ रहे हैं। जिस प्रकार सावन में एक बार वर्षा झड़ी का रूप धारण कर ले तो लगातार चलती है, उसी प्रकार महाराज कुँवरसिंह भी अंगेजों के विरुद्ध लड़ते हुए थकते नहीं हैं। पंद्रह दिन से युद्द चल रहा था और महाराज अतरौलिया, आजमगढ़ तथा मगहर में अंग्रेजों का डटकर मुकाबला करते रहे।

3. यहाँ किसकी और किस प्रकार प्रशंसा की जा रही है? समझाकर लिखिये।[3]

उत्तर : यहाँ महाराज कुँवरसिंह की प्रशंसा की जा रही है। सन् १८५७ में जब अंग्रेजी हुकुमत के विरुद्ध विद्रोह की आग भडक उठी थी, तो बिहार में भी आज़ादी के उन दीवानों ने आरा के राजा कुँवर सिंह ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई का बिगुल बजा दिया था। कुँवरसिंह अस्सी वर्ष के होने के बावजूद अंग्रेजों को मात-पर-मात देते आ रहे हैं। जिस प्रकार सावन में एक बार वर्षा झड़ी का रूप धारण कर ले तो लगातार चलती उसी प्रकार महाराज कुँवरसिंह भी अंगेजों के विरुद्ध लड़ते हुए थकते नहीं हैं। पंद्रह दिन से युद्द चल रहा था और महाराज अतरौलिया, आजमगढ़ तथा मगहर में अंग्रेजों का डटकर मुकाबला करते रहे।

4. प्रस्तुत एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिये। [3]

उत्तर : प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक अत्यंत उपयुक्त तथा सटीक है। विजय की बेला एकांकी के नायक महाराज कुँवरसिंह वीर, देशभक्त, साहसी और विवेकशील योद्धा के रूप में उभरते हैं। अस्सी वर्ष की अवस्था में भी वे जवानों को अपनी वीरता से लज्जित कर सकते हैं। उनकी तुलना लेखक ने बूढ़े शेर से की है। कुँवरसिंह अदम्य उत्साही और निर्भीक हैं। वे शरीर पर लगे जख्मों की भी परवाह नहीं करते हैं इसलिए जब उनकी घायल भुजा को कोई काटने के लिए तैयार न हुआ तो उन्होंने स्वयं ही उसे काट दिया। कुँवरसिंह प्रजा वत्सल राजा होने के कारण अपने अंतिम समय में अपने

स्थान पर उचित उतराधिकारी का चयन करते हैं। अपने भाई अमरसिंह को अंग्रेजों को भगाने का निर्देश देते हैं। उन्हें पंद्रह दिन तक अंग्रेजो से लड़ाई के बाद जो विजय प्राप्त हुई थी उसी आत्मिक संतुष्टि का सुख वे अपने अंतिम समय में ले रहे थे।

काव्य-चन्द्रिका

Q.14 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

"हर परिवर्तन से प्राण-शक्ति ले सकते हैं।
हर शक्ति स्नेह के चरणों पर चढ़ क्यों न जाए,
इसलिए उदय का क्षण जो आने वाला है,
पंछी उसमें उल्लास, गीत यदि नहीं गाये-
तो धरती से नभ तक की सारी सृष्टि व्यर्थ,
तो नभ से धरती तक का वातावरण लाज,
तुम उदय काल में मौन नहीं रह जाना मन,
कल के जैसा निकलेगा सूरज अभी आज।

उदय का क्षण

कवि - भवानीप्रसाद मिश्र

1. परिवर्तन का क्या अर्थ है? परिवर्तन से हम प्राण-शक्ति कैसे प्राप्त कर सकते है? [2]

उत्तर : संसार की प्रत्येक चीज अस्थाई है। चाहे प्रकृति हो या मनुष्य का जीवन, सब कुछ बदलता रहता है। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन, यह चक्र चलता रहता है। वर्षा-ग्रीष्म-शीत ये तीनों ऋतुएँ भी क्रमशः आती-जाती रहती हैं। उसी तरह मनुष्य का जीवन भी है। परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता जाता रहता है। इसलिए कहा जाता है कि

"परिवर्तन संसार का नियम है"। परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। यह परिवर्तन मानव जीवन को प्राण-शक्ति देता है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप दिन-रात होते हैं। दिनभर कर्म करने के बाद रात को कर्म की थकान को उतारने के लिए प्रकृति उचित वातावरण का निर्माण करती है। इससे मनुष्य स्फूर्ति, जोश और शक्ति प्राप्त करने में सफल होता है जिसकी सहायता से वह नए दिन की शुरुआत करता है।

2. उदय के क्षण में क्या-क्या होता है? कवि ने पक्षियों को क्या करने को कहा है? [2]

उत्तर : कवि का मानना है कि उदय का क्षण मानव जीवन में नयी ताज़गी, उमंग और जोश भर देता है। सम्पूर्ण प्रकृति सूर्य की स्वर्णिम आभा में डूब जाती है। हर तरफ़ सौन्दर्य की अनुभूति होती है। प्रभात होते ही पूरी प्रकृति आनंदमग्न दिखाई देने लगती है। रात्रि का आलस्य दूर होने लगता है। विश्राम की वजह से पूरे संसार में एक नई स्फूर्ति आ गयी होती है। सूर्य का उदित होना, पक्षियों का चहचहाना, फूलों का खिलना यह सब मिलकर संकेत करने लगते हैं कि मनुष्य को दुबारा अपने काम पर लग जाना चाहिए। ऐसे उदयकाल में कवि पक्षियों को कलरव करने के लिए कहता है।

3. उदय के क्षण में कवि ने हमें क्या करने के लिए प्रेरित किया है और क्यों? [3]

उत्तर : कवि का मानना है कि मानव जीवन में उदय का क्षण अत्यंत महत्त्वपूर्ण और उल्लास से भरा होता है। इस क्षण में मनुष्य को नये उत्साह, जोश और स्फूर्ति के साथ अपने दिन के कार्य में लग जाना चाहिए है। यह क्षण आशा की नयी किरण लेकर आता है। अत: मनुष्य को अपने कर्म-पथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

4. कल के जैसा निकलेगा सूरज अभी आज - पंक्ति के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं। [3]

उत्तर : प्रस्तुत पद्य खंड “उदय का क्षण” नामक कविता से लिया गया है। इसके कवि श्री भवानीप्रसाद मिश्र जी हैं। भवानीप्रसादजी ने अपनी कविताओं में गाँधीवादी विचारधारा को नवीन शैली में अभिव्यक्ति दी। इन्होनें प्रकृति की विभिन्न छवियों को सीधी सरल भाषा में रूपांतरित किया। मनुष्य के जीवन में परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। कभी अच्छा समय तो कभी बुरा समय आता-जाता रहता है। ‘आज भी सूरज निकलेगा’ इन शब्दों द्वारा कवि परिस्थितियों के इस बदलाव की ओर संकेत कर रहे हैं। अभी भले रात है किंतु कुछ समय बाद सूरज निकलेगा और चारों ओर प्रकाश छा जाएगा। इसी तरह भले अभी संकटों के बादल छाए हुए हैं। कोई मार्ग नहीं दिख रहा है किंतु थोड़े समय बाद ही उम्मीदों की किरण इन संकटों के बादल को चीरते हुए आएगी और उनसे बाहर निकलने का मार्ग बताएगी।

Q.15 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

मेरे नए खिलौने लेकर,
चले न जाएँ वे अपने घर।
चिंतित हो उठा, किन्तु फिर,
पूछा शिशु ने उसके बाद।'

फिर क्या होगा उसके बाद
कवि - बालकृष्ण राव

1. मेरे नए खिलौने लेकर .....पंक्तियों द्वारा कवि ने बालक के किस भाव को दर्शाया है, इससे बालक के स्वभाव का कौन-सा पक्ष हमारे सामने प्रस्तुत होता है? [2]

उत्तर : मेरे नए खिलौने लेकर ..... पंक्तियों द्वारा कवि ने बालक के अपने चीजों के प्रति स्वाभाविक मोह के भाव को दर्शाया है। इससे बालक के स्वभाव का मोहपक्ष हमारे सामने प्रस्तुत होता है बालक को जब पता चलता है कि उसके घर अन्य बच्चे आएँगे तो वह चिंतित हो उठा। बालक को लगा कि उसके घर अन्य बच्चे आएँगें तो कहीं वे उसके खिलौने न उठा ले जाएँ। शिशु की इस चिंता का कारण खिलौने से उनका सहज मोह है, बच्चे किसी भी हालत में अपने खिलौने किसी को देना नहीं चाहते हैं।

2. बच्चा अपनी माँ से प्रश्न क्यों पूछ रहा है पिता या किसी अन्य से क्यों नहीं? [2]

उत्तर : बालक का अपनी माँ के प्रति प्रेम होना एक स्वाभाविक सी बात है बच्चा रात-दिन अपने पास अपनी माँ को ही देखता है। माँ ही होती है जो उसके सारे प्रश्नों का उत्तर धैर्य से देती है। घर के पिता या अन्य सदस्य माँ की तरह सहनशील नहीं होते जो बालक की जिज्ञासा को शांत कर सके इसलिए बालक अपनी माँ से प्रश्न पूछ रहा है।

3. बच्चे का बार-बार प्रश्न पूछना उसके किस स्वभाव का परिचय देता है? बाल मनोविज्ञान के आधार पर समझाइये? [3]

उत्तर : बच्चे का बार-बार प्रश्न पूछना उसके बाल सुलभ जिज्ञासु स्वभाव का परिचय देता है। बालकों में जिज्ञासा बहुत अधिक होती है। उनके लिए पूरा संसार नया होता है। वो प्रत्येक चीज को समझना चाहते हैं। वो अपने आस-पास के लोगों से लगातार प्रश्न पूछते रहते हैं। उन प्रश्नों के उत्तर से वो नए प्रश्न बनाते हैं। उनकी जिज्ञासा का शांत होना लगभग असंभव है। उनके मन पर दुख-सुख का बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। वो पल भर में दुखी हो जाते हैं तो पल भर में खुश।

4. इस कविता के माध्यम से कवि ने क्या समझाना चाह है? क्या यह सत्य है? [3]

उत्तर फिर क्या होगा उसके बाद कविता कवि बालकृष्णजी की प्रश्नोत्तर शैली में लिखी गई एक मनोवैज्ञानिक कविता है। इस कविता में एक शिशु के बाल-सुलभ प्रश्नों के द्वारा कवि ने मानव के मन की जिज्ञासा का वर्णन किया है। हर एक मनुष्य के मन में यह शाश्वत प्रश्न बना ही रहता है कि 'फिर क्या होगा उसके बाद? 'कवि इस कविता द्वारा समझाना चाहता है कि यह संसार क्षण-भंगुर है और इसमें सुख और दुःख भी क्षणिक है। जीवन और मृत्यु का चक्र चलता रहता है। परन्तु मृत्यु के बाद क्या होता है? इस प्रश्न का अभी तक कोई उत्तर नहीं जान पाया है। जीवन में सुख और दुःख को समभाव से लेने की प्रेरणा देना ही कवि का उद्धेश्य है।

Q.16 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए :

सच्चा प्रेम वही है जिसकी
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।

देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है,
अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें,
मनुष्यता होती है विकसित।

स्वदेश प्रेम
कवि - रामनरेश त्रिपाठी

1. कवि ने सच्चे प्रेम के विषय में क्या बताया है तथा क्यों? [2]

उत्तर : कवि के अनुसार सच्चा प्रेम आत्मबलिदान की भावना से ही परिपूर्ण होता है। कवि मानता है कि त्याग के बिना प्रेम उसी तरह है जिस तरह आत्मा के बिना शरीर अर्थात् त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि देश के नौजवानों को अपने अन्दर सदैव त्याग की भावना रखनी चाहिए तथा देश के लिए समय आने पर बलिदान हेतु तैयार रहना चाहिए।

2. देश-प्रेम से किसका विकास होता है तथा किस प्रकार? समझाकर लिखिये। [2]

उत्तर : कवि ने यहाँ पर स्पष्ट रूप से कहा है कि देश-प्रेम की भावना से ही मनुष्यता का विकास होता है। देश और देशवासी एक दूसरे के पूरक हैं। देश-प्रेम की भावना को अपने अंदर समाहित करने से मनुष्य में आत्मीय गुणों का विकास होता है। देश के प्रति प्रेम की भावना से ही मन में उदारता, सहिष्णुता, निस्वार्थता आदि भावनाएँ जागती हैं जो अंत में मनुष्यता का विकास करती है।

3. देश-प्रेम क्या है? कविता के संदर्भ में समझाकर लिखिये। [3]

उत्तर : कविता के आधार पर सच्चा देश-प्रेमी संसार के किसी भी कोने में रहे या किसी भी प्रकार के विषम मौसम और परिस्थितियों में रहे उसे अपनी मातृभूमि से स्वाभाविक प्रेम होता है। अपने देश की रक्षा के लिए वह अपने प्राणों की आहूति देने से पीछे नहीं हटता है। सच्चा देश प्रेमी कभी किसी के सामने रोता गिड़गिड़ाता नहीं है बल्कि रक्त की अंतिम बूँद तक अपना तथा अपने देश के स्वाभिमान को बनाएँ रखता है।

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए : [3]

तृप्ति, आत्मबलि, निर्भर, पुण्यक्षेत्र, अमल, विलसित।

उत्तर - तृप्ति - संतोष, आत्मबलि - आत्मबलिदान, निर्भर - आश्रित, पुण्यक्षेत्र - पावन स्थल, अमल- स्वच्छ, विलसित - चमकता हुआ